मार्गबन्धुस्तोत्रम् 1

॥ मार्गबन्धुस्तोत्रम्॥

शम्भो महादेव देव। शिव शम्भो महादेव देवेश शम्भो। शम्भो महादेव देव॥

फालावनम्रित्करीटं फालनेत्रार्चिषा-दग्ध-पञ्चेषुकीटम्। शूलाहतारातिकूटं शुद्धमर्धेन्दुचूडं भजे मार्गबन्धुम्॥१॥

अङ्गे विराजद्भुजङ्गम् अभ्र-गङ्गा-तरङ्गाभि-रामोत्तमाङ्गम्। ओङ्कारवाटी-कुरङ्गं सिद्धसंसेविताङ्गिं भजे मार्गबन्धुम्॥२॥

नित्यं चिदानन्दरूपं निह्नुताशेष-लोकेश-वैरिप्रतापम्। कार्तस्वरागेन्द्र-चापं कृत्तिवासं भजे दिव्यसन्मार्गबन्धुम्॥३॥

कन्दर्प-दर्पघ्नमीशं कालकण्ठं महेशं महाव्योमकेशम्। कुन्दाभदन्तं सुरेशं कोटिसूर्यप्रकाशं भजे मार्गबन्धुम्॥४॥

मन्दारभूतेरुदारं मन्दरागेन्द्रसारं महागौर्यदूरम्। सिन्धूर-दूर-प्रचारं सिन्धुराजातिधीरं भजे मार्गबन्धुम्॥५॥

अप्पय्ययज्वेन्द्रगीतं स्तोत्रराजं पठेद्यस्तु भक्त्या प्रयाणे। तस्यार्थसिद्धिं विधत्ते मार्गमध्येऽभयं चाऽऽशुतोषो महेशः॥

This stotra can be accessed in multiple scripts at: http://stotrasamhita.net/wiki/Margabandhu_Stotram.

Begin generated on July 28, 2025